शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

# समकालीन हिन्दी तथा बांग्ला कविता: दिशा और सम्भावना

डॉ.रविशा देवी
पोस्ट डाक्टोरल फेलोशिप
आई.सी.एस.एस.आर.
नई दिल्ली, भारत

## शोध संक्षेप

*नई कविता के प्रसंग में डॉ.जगदीश गुप्त ने एक खतरे की ओर संकेत किया था, यह संकेत आज की कविता के सन्दर्भ में भी ज्यों का त्यों उल्लिखित है, "कविता के भविष्य के बारे मे कतई चिंतित नहीं हूँ। मेरी चिन्ता केवल कवियों और समीक्षकों की विचारधारा के विषय में है, जिसका प्रभाव कविता पर निश्चित रूप से पड़ता है, उठाने की दिशा में भी और गिराने की दिशा में भी।"*

## आज का कवि और कविता

आज के कवि को मूल्यों की तलाश है, मूल्यहीन समाज में सार्थकता की तलाश है, इसके लिए वह किसी लिजलिजे कमजोर जोर का सहारा लेकर विशिष्ट नहीं बनना चाहता। परम्परागत मूल्यों का घोषणा-पत्र भी वह अपने साथ चिपकाना नहीं चाहता। अस्तित्व की सार्थकता बनाम मूल्यहीनता के कवित की चेतना को उद्वेलित किया हुआ है। वह भ्रान्त मूल्यों की स्थिति को तोड़ना चाहता है। केदारनाथ सिंह ऐसी ही सम्भावनाओं के कवि हैं, 'जाड़े के शुरू में आलू' नामक कविता में मध्यवर्गीय आर्थिक ढांचे और उत्पादन, उत्पादक और उपभोक्ता के रिश्तों की अभिव्यक्ति भी है-

"वह जमन से निकलता है और सीधे
बाजार में चला आजा है
यह उसकी एक ऐसी क्षमता है
जो मुझे अक्सर दहशत से भर देती है
वह आता है
और बाजार में भरने लगती है एक अजीब-सी धूप
अजीब-सी अफवाहें
जहां बहुत सी चीजे लगातार टूट रही हैं
वह हर बार आता है
और पिछले मौसम के स्वाद से जुड़ जाता है।"

ठीक इसी प्रकार की कविता है-"दाने" जो उपभोक्ता संस्कृति को बेनकाब करती है-

"नहीं
हम मण्डी नहीं जाएंगे
खलिहान से उठते हुए
कहते हैं दाने
जाएंगे तो फिर लौटकर नहीं आएंगे
जाते-जाते
कहते जाते है दाने
अगर आये भी
तो तुम हमें पहचान नहीं पाओगे
अपनी अन्तिम चिट्ठी में
लिख भेजते हैं दाने
इसके बाद महीनों तक
बस्ती में
कोई चिट्ठी नहीं आती।"

समकालीन कविता सीधे-सीधे उस व्यवस्था को सम्बोधित है जो अपने वर्गीय स्वार्थों के तहत वास्तविकता की शिनाख्त को अवरूद्ध करने की कोशिश में निरन्तर संलग्न है और जो अपनी अस्तित्व-सुरक्षा की गर्ज और असहमति, विरोध और विद्रोह की सम्भावनाओं को नापैद करने के इरादे से, मनुष्य की संवेदनात्मक शिराओं को भोंथरा कर देती है, उसकी भाषा छीन लेती है

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

और उसे अपनी याद्दाश्त से अलग कर देती है। इन्हीं सब कारणों से सार्थक कविता का सवाल भी जुड़ा हुआ है, सार्थक कविता क्या होती है, वह जो आज के मनुष्य की धमनी में समय के दबाव को शिद्दत से महसूस करा दे, या वह जो इस महसूस किए हुए को कर्म की प्रखरता तक ले जाये, वह जो सम्पन्न अर्थच्छटाओं से युक्त कला का कीमती दस्तावेज हो या वह जो जीवन-संघर्ष के जुझारूपन में घटित होकर सर्जनात्मकता की एक नयी कसौटी सामने ला दें।

सन् साठ के बाद के प्रारम्भ के दो दशकों में जो कुछ लिखा गया उसमें मूल्यहीनता, आदमी की अच्छाई और महता में अविश्वास भी था किंतु नवें दशक की कविता शून्यवादी दृष्टिकोण से हटकर सकारात्मक मूल्यों की प्रस्तुति के प्रयास की ओर सचेष्ट है। जिस संत्रास को आज का मानव भोग रहा है, वहीं नव मानव-मूल्यों का प्रतिष्ठापक बन रहा है और बनेगा। आधुनिक परिवेश में संकट के बीच से मानव के गौरव को स्थापित करने वाले मूल्य जन्म से रहे हैं।

सही रचना में आम सन्दर्भो के जनिए वृहत्तर अर्थों को व्यक्त करने की कोशिश की जा रही हैं, "वस्तुतः सही रचना जिन्दगी के धनात्मक और स्फूर्तिमय पक्षों से कतराती नहीं बल्कि जिन्दगी के मामूली और रोजमर्रा के क्रिया व्यापारों में ही सघर्ष-दर्शन तलाशती है। इसीलिए ट्राटस्की ने कलाकार को चिहित पट्टियों तक ही सीमित न रहते हुए सम्पूर्ण खेत की सभी दिशाओं मंे हल चलाने की सलाह दी थी, इसके बिना रचना-संसार झूठा, नकली और कृत्रिम हो उठता है।

आज का युवा कवि मानवीय सरोकारों का कवि है। कविता के प्रति उसकी समझ गहरी हुई है। वह कविता को कविता के रूप में देखना चाहता है, नारे या आन्दोलन के रूप में नही। साठ के बाद की कविता की बात जब शुरू हुई थी तो उसे आयु सीमित मुहावरें से अलग व्यापक सन्दर्भ में देखने की मांग की गई थी। पर जैसा माहौल था, युवाचेतना, युवा असन्तोष, युवा विद्रोह के ढरे पर उपर्युक्त चर्चा युवा लेखन या युवा कविता तक सीमित हो गई। 'आज स्थिति वह नहीं है- परिस्थितियाँ ज्यादा भयानक हो सकती हैं पर कविता की समझ इधर नये कवियों में गहरी हुई- मानवीय दिलचस्पी भी कविता के नये दृश्यालेख में अधिक उजागर है। इसी का परिणाम है कि इधर के बिलकुल नये कवि "युवा कविता" के रूप में अपनी कविता की स्वीकृति नहीं चाहते-कविता के रूप में चाहते है। उनकी वयस्कता इसी से प्रमाणित है कि वे कविता में सिर्फ हिंसात्मक परिस्थिति न रचकर मानवीय अनुभव की उत्सुक नवीनता रचने को भी प्रतिबद्ध कविता का सरोकार मानते है। यह सत्य है कि आज की कविताओं का अधिकांश तत्कालिक संवेदनों तक सीमित है, किन्तु ऐसी कविताएं भी लिखी जा रही है जो न केवल मानसिक प्रतिक्रियाओं के स्थिति चित्र देकर जीवन-मूल्यों का आभास कराने वाली काव्यात्मक दृष्टि से सार्थक है अपितु बूल्यबोध और जीवन मर्म से भी जुडी हुई है। आज का 'युवा लेखक भूल-भुलैया वाली दिखावटी क्रान्ति के पीछे दौडता नहीं, बल्कि बर्फ में घिरे हुए आदमी के हित में कोयले की तरह जलता है। संत्रस्त और आतंकित नैराश्य का चित्रण कविता की सम्भावनाओं को पहचनाते हुए, इन शब्दों में हुआ है-

1 "कविता के लिए अब अवकाश नहीं हैं
मशीनों और भूख के जंगल में
कविता की चीख गूंज कर डूब जाती है" (विष्णु खरे, रूदन)

2 "अरब उसे मालूम है कि कविता
घेराव में किसी बौखलाये हुए आदमी का
संक्षिप्त एकालाप हैं
कविता-भाषा में
आदमी होने की तमीज है" (धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ॰ 85)

3 भाषा कोरे वादों से

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

वायदों से भ्रष्ट हो चुकी सबकी
न सही यह कविता
यह मेरे हाथ की छटपटाहट सही
यह कि मैं घोर उजाले में खोजता हूँ।

हिन्दी काव्य की तरह बंगला काव्य भी मूल्यों की तलाश का काव्य है, फर्क इतना है कि वह शाश्वत मूल्यों की अधिक चिन्ता नहीं करता वर्तमान मूल्यों की अभिव्यक्ति या यथास्थिति के प्रति सचेत करना ही इस समय उसके लिए पर्याप्त है। साधारण जन की समस्याओं का मानसिक स्थितियों से वह जुड़ा हुआ है, ऐसी कविताएं बहुत महत्वपूर्ण दिखाई न पड़ने पर भी युगीन यथार्थ की अभिव्यक्ति कुशलतापूर्वक करती हैं।

वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय ने वामपंथी अवसरवादिता पर चोट की है। लाल या नीले कुर्ते पहनकर आने वाले राजा गरीबी दूर करने के लिए नहीं आते। जनता उसी तरह कष्ट भोगती है-सत्ता चाहे किसी को हो। धरती और इंसान के प्रति प्रतिबद्धता ही उनकी कविता की सार्थकता है-

"मुल्क न हो गोया
काले धन का पहाड़ हो
और नदी जिसका पानी
पत्थर की तरह भारी है।
काले के अलावा
यहां और कोई रंग नहीं है।
लोग हैं
वे झुक्कर चलते हैं
प्यास लगने पर अपना खून पीते हैं
भूख लगने पर...
वे नहीं जानते वहां उनका मुल्क,

यदि विष्णु दे, नीरेन्द्र नाथ चक्रवर्ती, प्रेमेन्द्र मित्र, शक्ति चट्टोपाध्याय, शंखघोष, पूर्णेन्द्र पत्री आज के बांग्ला काव्य की उपलब्धि हैं तो प्रसून कुमार मुखोपाध्याय, जय गोस्वामी, देवारति मित्र, मलय गोस्वामी, अनन्य राय, आलोक सरकार, नवारूण भट्टाचार्य, विपुल चक्रवर्ती, मुरारी मुखोपाध्याय जैसे कवियों में आज के बांग्ला काव्य की अनन्त सम्भावनाएं छिपी हैं। ये कवि कविता में आज के बांग्ला काव्य की अनन्त सम्भावनाएं छिपी है। ये कवि कविता के ग्रामांचल से कविता के शहर को घेरना चाहते हैं। नवारूण हर जगह हर स्थान पर दीवारों पर स्टेन्सिल से खून का इश्तहार लगाना चाहते हैं। आत्महत्या करने वाली किसी विवश युवती का चित्र खींचते हुए कवित ने अनन्तकाल को सम्बोधित कर ऐसे ज्वलन्त प्रश्न उठाते हैं जो समाज के शाप से भयभीत होकर आत्महत्या करने को निरर्थक ठहरा देते हैं-

"एक कोठरी में लालटेन के कांपते उजाले में
दिखती है एक लड़की अपने ही कपडे से गला बांधकर अकेले झूलती हुई
इसी तरह कटते हैं दिन-रात काल-अकाल
मृत युवती झूलती है जम जाती है लालटेन पर कालिख
इससे तो लाख बेहतर था देशद्रोही कहलाकर जल जाना
क्या तुम गुस्से मंे हो अपने अस्तित्व की कदंरा में क्या तुम चाहती हो शहर, गांव, बंदरगाह में युद्ध"।

बांग्ला की वर्तमान कविता बहुआयामी है। भावपक्ष की तरह शिल्प पक्ष को लेकर भी कवि सजग है उग्र आक्रामक तेवर वाली प्रतिवादी कविता जहां भावाभिव्यक्ति पर बल देती है वहीं सामाजिक सहानुभूति को खुली आंखो से देखने वाली विचारशील कविता शिल्पपक्ष के प्रति भी उतनी ही सजग है। "बांग्ला कवित आज विशेषीकरण की दुनिया में बैठा हुआ उद्धति-उल्लेख की सहायता से, अप्रचलित आभिधानिक शब्दों का प्रयोग करके, वाक्य विन्यास और शब्द विन्यास की प्रणाली को तोड़कर, भाषा को प्रयोजन के अनुसार शक्ति और व्याकरण के शासन से मुक्त करके अपनी काव्य-कला को विशेष विद्यानुशासन में रूपान्तरित कर रहा है।"

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

"सीधी सादी, भयमुक्त सहज प्रसन्न" कविताएं भी लिखी जा रही हैं। ये कविताएं अधिक सार्थक, अधिक विश्वश्सनीय लगती हैं। मृदुलदास गुप्त की कविता प्रेम के बहाने जीवन में आस्थ को पुष्ट करती हैं-

"हाथ पकड़कर कितना रटाया था
तोते की तरह
भला पहाड़ को जाते सैलानी में
कहां होता है मृत्यु भय
घटना समुद्र ही खींचता है
भीगती हुई तट रेखा
अब तक अध्यापिका हो गई होगी
किसी शहर में
दूर"

"कविता के केन्द्र में प्रेम के होते हुए भी वह कविता प्रेम के उस प्रचलित और रूमानी मिथक को नष्ट करती है जो एक लम्बे समय से बांग्ला कविता के मानस को धुंध की तरह घेरे हुए थी और रवीन्द्र के निरन्तर प्रभाव ने उसे घटने नहीं दिया था। प्रेम के उस अशरीरी और रहस्यमय रूप का वास्तविक और स्वाभाविक धरातल हमारे समय से वह नहीं रहा। उसके बुनियादी चरित्र में बदलाव के साथ यथार्थपरकता आयी है।" कहने की आवश्यकता नहीं कि आज के युवा कवि उस कोहरे से पूरी तरह मुक्त हैं। प्रेम को उन्होंने खुरदरी जमीन पर यथार्थ के बहुत ठण्डे और सहज स्वीकार के साथ अपनाया है। इन कवियों में अमिताथ दासगुप्त, उत्पल कुमार बसु, जय गोस्वामी, व्रत चक्रवर्ती जैसे युवा कवित शामिल हैं। मनोतोष मुखर्जी की "कलकत्ता" कविता में शहर के प्रति संवेदना इस प्रकार व्यक्त हुई है-

"भिखारी के प्रति एक भिखारी का प्रणय-संकेत
इस दृश्य को सीने में लिए लेटा हुआ
रात्रि का फुटपाथ
मध्यरात्रि घर लौटकर अकेले में,
यह दृश्य
नींद में स्वप्न में एकाकार
भिखारिन कलकत्ता
मैं प्रणय भिखारी उसका।"

कवि अब उस भयावह जड़ता को पहचानने लगे है। जिसके दबाव में पूरी पीढ़ी के गूंगी हो जाने का खतरा है। एक ओर क्रान्तिकारी घोषणाएं होती है दूसरी ओर लोग सब कुछ भुलाकर सुख सुविधा जुटाने में खोने लगते हैं। इस मनोवृत्ति को तोड़ने की कोशिश कवि ने लगातार की है-

"खो जाता हूं, लेकिन हारता नहीं हूं।
असल में
भीड़ में में मिलकर ही मैं धीरे-धीरे
कर लेता हूँ तैयार अपना नया हथियार।
जिन्दा रहने के लिए ही जीतनी होगी
मुझे यह लड़ाई।
पुनः मैं
दूसरों के शब्दों को लेता हूं उधार,
लेकिन जिन्दा रहने की यह इच्छा
है मेरी अपनी।"

बांग्ला कविता हो या हिन्दी कविता, उसकी सामश्र्य और सम्भावना के बारे में यह कथन एकदम सटीक है कि "एक काव्य शब्द के बारे में जब तक हमारा भ्रगम बना हुआ है कि व्यवस्था की अभेद्य दीवार कुछ टिक सकेगी या विचलित होगी, तब तक बहुत गनीमत है अन्यथा पूंजी और हिंसा जैसी शक्तियां ही समाज को प्रभावित करने का जरिया रह जायेंगी।" आज का कवि अपने छोटे-छोटे अनुभवों के माध्यम से अपने समय के सम्पूर्ण समाज को हमारे समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। स्थितियों का ठंडा, तटस्थ या तनाव रहित चित्रण आज की कविताओं में नहीं है अपितु घातक साजिशों को उघाड़ना ही उसका उद्देश्य है। इसके साथ ही आज के कवि में एक नवीन सौन्दर्यबोध की छटपटाहट भी है। "इस कविता ने एक नए सौन्दर्यशास्त्र की सम्भावना को विकसित किया है। यह कविता अनुभव और कला की उस सीमित ओर दकियानूस धारणा से अपने को मुक्त करने के लिए प्रयत्नशील है

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

जिसके तहत नयी कविता में अनुभव को अनुभववाद में और कला को कलावाद में बदलते देर नहीं लगी थी।"

आज की कविता सक्रिय और सचेत है, वह सब प्रकार के शोषण के खिलाफ जन-संघर्ष चाहती है। वह जुझारूपन की कविता है इसीलिए कविता और जीवन के शाश्वत सम्बन्ध को उसने फिर सिद्ध किया है। आचार्य शुक्ल के ये शब्द आज की कविता के चरित्र का उद्घाटन कर उसके लिए सत्य सिद्ध होते हैं, "मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य-असभ्य सभी जातियों मंे, किसी न किसी रूप में पाई जाती है। चाहे इतिहास न हो, विज्ञान न हो, दर्शन न हो पर कविता का प्रचार अवश्य रहेगा। बात यह है कि मनुष्य अपने ही व्यापारों का ऐसा सघन और जटिल मंडल बांधता चल आ रहा है, जिसके भीतर बंधा-बंधा वह शेष सृष्टि के साथ अपने हृदय का सम्बन्ध भूला रहता है। इस परिस्थिति में मनुष्य को अपनी मनुष्यता खोने का डर बराबर रहता है। इसी से अन्तः प्रकृति में मनुष्यता को समय-समय पर जगाते रहने के लिए कविता मनुष्य जाति के साथ चली आ रही है। और चलती रहेगी। जानवरों को इसकी जरूरत नहीं।" आज की कविता ज्ञान, तर्क और विचार से भी जुड़ी है, सामाजिक, राजनीतिक चेतना से भी, अन्तर्विरोधी, विसंगतियों और आत्मसंघर्ष के निरूपण से भी, उग्र और आक्रामक तेवरों से भी, शांत संतुलित और निरावेग से युक्त निर्णयात्मक संकल्पों से भी। कविता स्वयं सम्भावना है और मानवीय सरोकारों का दस्तावेज है।

## निष्कर्ष

"इससे इन्कार नहीं हैं कि हमारे जमाने की सच्चाई हिंसा भरी आक्रामक और उग्र सच्चाई है लेकिन सच्चाई सीधी-सरल चीज नहीं है। वह हमेशा मानवीय सम्भावना के कुछ स्तरों पर एक साथ गहरे जुड़ी हुई होती हैं इसलिए लाजमी है कि इस सच्चाई को चरितार्थ उजागर करने वाली कविता न केवल उग्र और नाटकीय हो बल्कि सम्भावना के लगातार और अनन्त अहसास से अविकल घिरी हो।" आज की कविता जीवन्त मानवीय लगाव की कविता है, वह विनाशकारी ताकतों के विरूद्ध कारगर हस्तक्षेप की सम्भावना पर बल देती है। आज की कविता का सन्देश सकारात्मक है, वह आत्मीय लगाव भरे जीवन को लयात्मक अभिव्यक्ति देने की कोशिश है वर्जना, कुण्ठा से घिरे अतृप्त मन को मुक्ति देने की कोशिश करती है। इसीलिए आज का कवि सहज मानवीय मूल्यों पर विश्वास कर चलता है और आस्था, विश्वास तथा मानवता की प्रतिष्ठा करना चाहता है।

## सन्दर्भ

*1 जगदीश गुप्त: नई कविता: स्वरूप और समस्याएं, पृ.-9*
*2 केदारनाथ सिंह: जमीन पक रही है, पृ.-57-58*
*3 केदारनाथ सिंह: अकाल में सारस, पृ.-79*
*4 विश्वनाथ प्रसार तिवारी: साथ चलते हुए (1979) पृ.-15*
*5 मलयज: कविता से साक्षात्कार, पृ.-10*
*6 बलदेव वंशी: अंधेरे के बावजूद: भूमिका (1978)*
*7 मार्क्सिस्ट आन लिटरेचर (द फारमलिस्ट स्कूल आफ पोइट्री एण्ड मार्क्सिस्म्) लियो ट्राटस्की, सं. डेविड ग्रेग (1975) पृ.-369*
*8 डा. परमानन्द श्रीवास्तव: समकालीन कविता का व्याकारण, पृ.-9*
*9 धूमिल: युवा लेखक सम्मेलन पटना में दिए गए भाषण का अंश, समकालीन कविता पर एक बहस,पृ. 111 से उद्धृत।*
*10 वीरेन्द्र चट्टोपाध्यायः मुल्क इन्सान और पेड़ की कविता, समकालीन भारतीय साहित्य-22, पृ.-166*
*11 नवारूण भट्टाचार्य-पटकथा 1399 (बांग्ला वर्ष): यह मृत्यु उपत्यका नहीं है, पृ.-37-38*
*12 डा. इन्द्रनाथ चौधरी: बांग्ला कविता का कालान्तरण, स. भा.सा-3 पृ॰-130*
*13 शानी: समकालीन भारतीय साहित्य-30, पृ.-7*
*14 मनोतोष चक्रवर्ती: समकालीन भारतीय साहित्य-30, पृ.-129 अनुवादक-मीता घोष।*
*15 नीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती-वहीं पृ. 113*